यीशु मसीह के जीवन में अन्तिम पांच दिन

फ्रैंकलिन द्वारा तैयार नोट्स

रविवार : **जयवंत प्रवेश** मत्ती 21:1-11

यह घटना निर्गमन 12:3 के अनुसार महीने के **दसवें दिन** घटी, जब "फसह का मेमना" चुनकर "पितरों के घराने" ले जाया जाता है। यह **चौदहवें दिन** अर्थात बलिदान करने से **पांच दिन** पहले था (निर्गमन 12:18)।

गुरुवार : **अन्तिम फसह / प्रभु भोज**

"अखमीरी रोटी के पहले दिन" पर फसह सांझ के समय खाई जाती थी (निर्गमन 12:18)। उस साल यह गुरुवार का दिन था।

मत्ती 26:17:41 **अखमीरी रोटी के पर्व के पहिले दिन**, चेले यीशु के पास आकर पूछने लगे; तू कहां चाहता है कि हम तेरे लिये फसह खाने की तैयारी करें? (26) जब वे खा रहे थे, तो यीशु ने रोटी ली, और आशीष मांगकर तोड़ी, और चेलों को देकर कहा, लो, खाओ; यह मेरी देह है। (27) फिर उस ने कटोरा लेकर, धन्यवाद किया, और उन्हें देकर कहा, तुम सब इस में से पीओ। (28) क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है। (29) मैं तुम से कहता हूं, कि दाख का यह रस उस दिन तक कभी न पीऊंगा, जब तक तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में नया न पीऊं।।

लूका 22:14-23

यूहन्ना 13-16 यीशु अपने शिष्यों के पैर धोता है और उन्हें सिखाता है

गतसमनी का बाग : मत्ती 26:36-46

मत्ती 26:37-41 और वह पतरस और जब्दी के दोनों पुत्रों को साथ ले गया, और उदास और व्याकुल होने लगा। (38) तब उस ने उन से कहा; मेरा जी बहुत उदास है, यहां तक कि मेरे प्राण निकला चाहते: तुम यहीं ठहरो, और मेरे साथ जागते रहो। (39) फिर वह थोड़ा और आगे बढ़कर मुंह के बल गिरा, और यह प्रार्थना करने लगा, कि हे मेरे पिता, यदि हो सके, तो यह कटोरा मुझ से टल जाए; तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो। (40) फिर चेलों के पास आकर उन्हें सोते पाया, और पतरस से कहा; क्या तुम मेरे साथ एक घड़ी भी न जाग सके? (41) जागते रहो, और प्रार्थना करते रहो, कि तुम परीक्षा में न पड़ो: आत्मा तो तैयार है, परन्तु शरीर दुर्बल है।

यीशु से विश्वासघात और उसे बंदी बनाया जाना मत्ती 26:47-56

(57) और यीशु के पकड़नेवाले उस को काइफा नाम महायाजक के पास ले गए, जहां शास्त्री और पुरनिए इकट्ठे हुए थे। (58) और पतरस दूर से उसके पीछे पीछे महायाजक के आंगन तक गया, और भीतर जाकर अन्त देखने को प्यादों के साथ बैठ गया।(59) महायाजक और सारी महासभा यीशु को मार डालने के लिये उसके विरोध में झूठी गवाही की खोज में थे।(60) परन्तु बहुत से झूठे गवाहों के आने पर भी न पाई। (61) अन्त में दो जनों ने आकर कहा, कि उस ने कहा है; कि मैं परमेश्वर के मन्दिर को ढा सकता हूं और उसे तीन दिन में बना सकता हूं।(62) तब महायाजक ने खड़े होकर उस से कहा, क्या तू कोई उत्तर नहीं देता? ये लोग तेरे विरोध में क्या गवाही देते हैं? परन्तु यीशु चुप रहा: महायाजक ने उस से कहा। (63) मैं तुझे जीवते परमेश्वर की शपथ देता हूं, कि यदि तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है, तो हम से कह दे। (64) यीशु ने उस से कहा; तू ने आप ही कह दिया: बरन मैं तुम से यह भी कहता हूं, अब से तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दहिनी ओर बैठे, और आकाश के बादलों पर आते देखोगे। (67) तब उन्हों ने उस से मुंह पर थूका, और उसे घूंसे मारे, औरों ने थप्पड़ मार के कहा।

पतरस ने उसका तीन बार इनकार किया

मत्ती 26:69-75 (74) तब वह धिक्कार देने और शपथ खाने लगा, कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता; और तुरन्त मुर्ग ने बांग दी। (75) तब पतरस को यीशु की कही हुई बात स्मरण आई कि मुर्ग के बांग देने से पहिले तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा और वह बाहर जाकर फूट फूट कर रोने लगा।।

शुक्रवार ... परन्तु रविवार आने वाला है

पीलातुस के सामने यीशु

मत्ती 27:1-2 जब भोर हुई, तो सब महायाजकों और लोगों के पुरनियों ने यीशु के मार डालने की सम्मति की। (2) और उन्हों ने उसे बान्धा और ले जाकर पीलातुस हाकिम के हाथ में सौंप दिया।।

यूहन्ना 18: 33-38 तब पीलातुस ने .... यीशु को बुलाकर, उस से पूछा, **क्या तू यहूदियों का राजा है?** (34) यीशु ने उत्तर दिया, क्या तू यह बात अपनी ओर से कहता है या औरों ने मेरे विषय में तुझ से कही? (35) पीलातुस ने उत्तर दिया, क्या मैं यहूदी हूं? तेरी ही जाति और महायाजकों ने तुझे मेरे हाथ सौंपा, तू ने क्या किया है? (36) यीशु ने उत्तर दिया, कि मेरा राज्य इस जगत का नहीं, यदि मेरा राज्य इस जगत का होता, तो मेरे सेवक लड़ते, कि मैं यहूदियों के हाथ सौंपा न जाता: परन्तु अब मेरा राज्य यहां का नहीं। (37) पीलातुस ने उस से कहा, तो **क्या तू राजा है?** यीशु ने उत्तर दिया, **तू कहता है, क्योंकि मैं राजा हूं;** मैं ने इसलिये जन्म लिया, और इसलिये जगत में आया हूं कि **सत्य** पर गवाही दूं जो कोई **सत्य** का है, वह मेरा शब्द सुनता है। (38) पीलातुस ने उस से कहा, सत्य क्या है? और यह कहकर वह फिर यहूदियों के पास निकल गया और उन से कहा, **मैं तो उस में कुछ दोष नहीं पाता।**

बरअब्बा को छोड़ा गया, यीशु को दण्ड दिया गया

मत्ती 27:15-18 और हाकिम की यह रीति थी, कि उस पर्व में लोगों के लिये किसी एक बन्धुए को जिसे वे चाहते थे, छोड़ देता था। (16) उस समय बरअब्बा नाम उन्हीं में का एक नामी बन्धुआ था।(17) सो जब वे इकट्ठे हुए, तो पीलातुस ने उन से कहा; **तुम किस को चाहते हो, कि मैं तुम्हारे लिये छोड़ दूं? बरअब्बा को, या यीशु को जो मसीह कहलाता है?** (20) महायाजकों और पुरनियों ने लोगों को उभारा, कि वे बरअब्बा को मांग ले, और **यीशु को नाश कराएं।** (21) हाकिम ने उन से पूछा, कि इन दोनों में से किस को चाहते हो, कि तुम्हारे लिये छोड़ दूं? **उन्हों ने कहा; बरअब्बा को।** (22) पीलातुस ने उन से पूछा; फिर यीशु को जो मसीह कहलाता है, क्या करूं? सब **ने उस से कहा, वह क्रूस पर चढ़ाया जाए।** (23) हाकिम ने कहा; क्यों उस ने क्या बुराई की है? परन्तु **वे और भी चिल्ला, चिल्लाकर कहने लगे, "वह क्रूस पर चढ़ाया जाए"।** (24) जब पीलातुस ने देखा, कि कुछ बन नहीं पड़ता परन्तु इस के विपरीत हुल्लड़ होता जाता है, तो उस ने पानी लेकर भीड़ के साम्हने अपने हाथ धोए, और कहा; मैं इस धर्मी के लोहू से निर्दोष हूं; तुम ही जानो। (25) **सब लोगों ने उत्तर दिया, कि इस का लोहू हम पर और हमारी सन्तान पर हो।**(26) इस पर उस ने बरअब्बा को उन के लिये छोड़ दिया, और **यीशु को कोड़े लगवाकर सौंप दिया, कि क्रूस पर चढ़ाया जाए।।**

काँटों का मुकुट

यूहन्ना 19:2-15 और सिपाहियों ने **कांटों का मुकुट** गूंथकर उसके सिर पर रखा, और उसे **बैंजनी वस्त्र** पहिनाया। (3) और उसके पास आ आकर कहने लगे, **हे यहूदियों के राजा, प्रणाम!** और **उसे थप्पड़ मारे।** (4) तक पीलातुस ने फिर बाहर निकलकर लोगों से कहा, देखो, मैं उसे तुम्हारे पास फिर बाहर लाता हूं; ताकि तुम जानो कि **मैं कुछ भी दोष नहीं पाता।** (5) तक यीशु कांटों का मुकुट और बैंजनी वस्त्र पहिने हुए बाहर निकला और पीलातुस ने उन से कहा, **देखो, यह पुरूष।** (6) जब महायाजकों और प्यादों ने उसे देखा, तो चिल्लाकर कहा, कि उसे क्रूस पर चढ़ा, क्रूस पर : पीलातुस ने उन से कहा, तुम ही उसे लेकर क्रूस पर चढ़ाओ; क्योंकि मैं उस में दोष नहीं पाता। (7) यहूदियों ने उस को उत्तर दिया, कि **हमारी भी व्यवस्था है** और उस व्यवस्था के अनुसार वह मारे जाने के योग्य है क्योंकि **उस ने अपने आप को परमेश्वर का पुत्र बनाया।**

(8) जब पीलातुस ने यह बात सुनी तो और भी डर गया। (9) और फिर किले के भीतर गया और यीशु से कहा, तू कहां का है? परन्तु यीशु ने उसे कुछ भी उत्तर न दिया। (10) पीलातुस ने उस से कहा, मुझ से क्यों नहीं बोलता? क्या तू नहीं जानता कि तुझे छोड़ देने का अधिकार मुझे है और तुझे क्रूस पर चढ़ाने का भी मुझे अधिकार है।(11) यीशु ने उत्तर दिया, कि यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता, तो तेरा मुझ पर कुछ अधिकार न होता; इसलिये जिस ने मुझे तेरे हाध पकड़वाया है, उसका पाप अधिक है।

(12) इस से पीलातुस ने उसे छोड़ देना चाहा, परन्तु यहूदयों ने चिल्ला चिल्लाकर कहा, यदि तू इस को छोड़ देगा तो तेरी भक्ति कैसर की ओर नहीं; जो कोई अपने आप को राजा बनाता है वह कैसर का साम्हना करता है।

(13) ये बातें सुनकर पीलातुस यीशु को बाहर लाया और उस जगह एक चबूतरा था जो इब्रानी में गब्बता कहलाता है, और न्याय आसन पर बैठा। (14) **यह फसह की तैयारी का दिन था** और छठे घंटे के लगभग था (प्रात: छह बजे, रोमन समय): तब उस ने यहूदियों से कहा**, देखो, यही है, तुम्हारा राजा!** (15) परन्तु वे चिल्लाए कि **ले जा! ले जा! उसे क्रूस पर चढ़ा:** पीलातुस ने उन से कहा, **क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ाऊं?** महायाजकों ने उत्तर दिया, कि **कैसर को छोड़ हमारा और कोई राजा नहीं।**

क्रूस पर चढ़ाया जाना

यूहन्ना 19:16-30 तब उस ने उसे उन के हाथ सौंप दिया ताकि वह क्रूस पर चढ़ाया जाए।।(17) तब वे यीशु को ले गए। और **वह अपना क्रूस उठाए हुए** उस स्थान तक बाहर गया, जो खोपड़ी का स्थान कहलाता है और इब्रानी में गुलगुता। (18) वहां उन्हों ने उसे और उसके साथ और दो मनुष्यों को **क्रूस पर चढ़ाया**, एक को इधर और एक को उधर, और बीच में यीशु को।

क्रूस से यीशु के सात वचन

उसका पहला वचन:

उन लोगों के लिए प्रार्थना जिन्होंने उसके हाथों और पैरों में कीलें ठोकी

हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहें हैं? लूका 23:34

प्रेम का सर्वोच्च उदाहरण

प्रेम क्षमा करता है! पीड़ा और अपमान की चिन्ता किए बिना।

1 कुरिन्थियों 13:5 प्रेम .... अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता।

यशायाह 53:12 इस कारण मैं उसे महान लोगों के संग भाग दूंगा, और, वह सामर्थियों के संग लूट बांट लेगा; क्योंकि उसने अपना प्राण मृत्यु के लिये उण्डेल दिया, वह अपराधियों के संग गिना गया; तौभी उस ने बहुतों के पाप का बोझ उठा लिया, और, **अपराधियों के लिये बिनती करता है**।

यूहन्ना 19:19 और पीलातुस ने एक दोष- पत्र लिखकर क्रूस पर लगा दिया और उस में यह लिखा हुआ था, यीशु नासरी यहूदियों का राजा। (20) यह दोष- पत्र बहुत यहूदियों ने पढ़ा क्योंकि वह स्थान

जहां यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया था नगर के पास था और पत्रा इब्रानी और लतीनी और यूनानी में लिखा हुआ था।(21) तब यहूदियों के महायाजकों ने पीलातुस से कहा, यहूदियों का राजा मत लिख परन्तु यह कि "उस ने कहा, मैं यहूदियों का राजा हूं"। (22) पीलातुस ने उत्तर दिया, कि मैं ने जो लिख दिया, वह लिख दिया।।

उसका क्रूस पर चढ़ाया जाना छः घन्टे चला, प्रातः 9 बजे से दोपहर 3 बजे तक

मरकुस 15:25 और पहर दिन* चढ़ा था, जब उन्हों ने उस को क्रूस पर चढ़ाया।

* दिन का तीसरा पहर, प्रातः 9 बजे

लूका 23:35-39 लोग खड़े खड़े देख रहे थे, और **सरदार भी ठट्ठा** कर करके कहते थे, कि इस ने औरों को बचाया, यदि यह परमेश्वर का मसीह है, और उसका चुना हुआ है, तो अपने आप को बचा ले। (36) **सिपाही भी** पास आकर और सिरका देकर उसका **ठट्ठा** करके कहते थे।(37) यदि तू यहूदियों का राजा है, तो **अपने आप को बचा**। (38) और उसके ऊपर एक पत्र भी लगा था, कि यह यहूदियों का राजा है। (39) जो **कुकर्मी** लटकाए गए थे, **उन में से एक** ने उस की निन्दा करके कहा; क्या तू मसीह नहीं? तो **फिर अपने आप को और हमें बचा।**

1 कुरिन्थियों 13:5 प्रेम झुंझलाता नहीं। यह दूसरों की आवश्यकताओं को अपने से पहले रखता है, चाहे इसके लिए कोई भी कीमत चुकानी पड़े।

वह अपने आप को बचा सकता था। परन्तु यह कीलें नहीं थी जिनके कारण वह क्रूस पर जकड़ा था। **यह तो लोगों के लिए उसका प्रेम था।**

मैं अपने पिता से बिनती कर सकता हूं, और वह स्वर्गदूतों की बारह पलटन से अधिक मेरे पास अभी उपस्थित कर देगा? मत्ती 26:53

(40) इस पर दूसरे ने उसे डांटकर कहा, क्या तू परमेश्वर से भी नहीं डरता? तू भी तो वही दण्ड पा रहा है।(41) और हम तो न्यायानुसार दण्ड पा रहे हैं, क्योंकि हम अपने कामों का ठीक फल पा रहे हैं; पर इस ने कोई अनुचित काम नहीं किया। (42) तब उस ने कहा; हे यीशु, जब तू अपने राज्य में आए, तो मेरी सुधि लेना।

अन्य अनेक अनुच्छेदों के साथ यह अनुच्छेद भी इस पृथ्वी पर दो प्रकार के लोगों को प्रकट करता है। एक वे जिनके पास प्रकाशन है, जिनके पास विश्वास है और वे उसे मानते हैं तथा दूसरे वे जिनके पास ये नहीं है।

क्रूस से यीशु का दूसरा वचन:

अपने से अधिक दूसरों की चिन्ता। मैं तुझ से सच कहता हूं; कि **आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा**।। लूका 23:43

यह बहुत ही आश्चर्यचकित कर देने वाले शब्द हैं जबकि मृत्यु बहुत नजदीक हो।
1 कुरिन्थियों 13:5 प्रेम अपनी भलाई नहीं चाहता

रोमियों 10:13 क्योंकि **जो कोई** प्रभु का नाम लेगा, **वह उद्धार पाएगा**।

यूहन्ना 19:23 जब सिपाही यीशु को क्रूस पर चढ़ा चुके, तो उसके कपड़े लेकर चार भाग किए, हर सिपाही के लिये एक भाग और कुरता भी लिया, परन्तु कुरता बिन सीअन ऊपर से नीचे तक बुना हुआ था: इसलिये उन्हों ने आपस में कहा, हम इस को न फाडें, परन्तु इस पर चिट्ठी डालें कि वह किस का होगा। (24) यह इसलिये हुआ, कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो कि उन्हों ने मेरे कपड़े आपस में बांट लिये और मेरे वस्त्रा पर चिट्ठी डाली (भजन संहिता 22:19): सो सिपाहियों ने ऐसा ही किया। (25) परन्तु यीशु के क्रूस के पास उस की माता और उस की माता की बहिन मरियम, क्लोपास की पत्नी और मरियम मगदलीनी खड़ी थी।

क्रूस से यीशु का तीसरा वचन : अभी भी दूसरों के लिए चिन्तित

(26) यीशु ने अपनी माता से कहा; हे नारी, देख, यह तेरा पुत्र है। (27) तब उस चेले से कहा, यह तेरी माता है, और उसी समय से वह चेला, उसे अपने घर ले गया।।

प्रेम प्रबन्ध करता है - दूसरों का ध्यान करता है - प्रेम अपनी भलाई नहीं चाहता। प्रेम कभी टलता नहीं। (1 कुरिन्थियों 13:5,8)

क्रूस से यीशु का चौथा वचन

यूहन्ना 19:28-30 इस के बाद यीशु ने यह जानकर कि **अब सब कुछ हो चुका**; इसलिये कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो कहा, मैं प्यासा हूं। (29) वहां एक सिरके से भरा हुआ बर्तन धरा था, सो उन्हों ने सिरके के भिगोए हुए इस्पंज को जूफे पर रखकर उसके मुंह से लगाया।

अपने कार्य को समाप्त करने के बाद, अपनों के लिए पापों की क्षमा और उद्धार का कार्य पूर्ण होने के बाद ही उसने अपनी ज़रूरतों के बारे में सोचा।
प्रेम अपनी भलाई नहीं चाहता (1 कुरिन्थियों 13:5)

क्रूस से यीशु का पांचवां वचन

(30) जब यीशु ने वह सिरका लिया, तो कहा **पूरा हुआ** और सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए।

कार्य पूरा हुआ: लूका 19:10 क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढ़ने और उन का उद्धार करने आया है।।

यूहन्ना 17:4-5 **जो काम तू ने मुझे करने को दिया था, उसे पूरा करके** मैं ने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है। (5) और अब, हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत के होने से पहिले, मेरी तेरे साथ थी।

प्रेम कभी टलता नहीं! (1 कुरिन्थियों 13:8) कभी हार नहीं मानता! वह सब बातें सह लेता है (1 कुरिन्थियों 13:7) दूसरों के लिए सारा दुःख सह लेता है।

क्रूस से यीशु का छठा वचन :

मत्ती 27:45-46 दोपहर से लेकर तीसरे पहर (3 बजे) तक उस सारे देश में **अन्धेरा** छाया रहा। (46) तीसरे पहर के निकट यीशु ने बड़े शब्द से पुकारकर कहा, एली, एली, लमा शबक्तनी? अर्थात् हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?

दोपहर के समय **"अँधेरा"**? क्योंकि "जगत की ज्योति" हमारे लिए पाप बनकर जा रही थी,।

परमेश्वर पिता ने अपने पुत्र से मुँह फ़ेर लिया।

ऐसा प्रतीत होता था कि पाप और मृत्यु विजयी हुए हैं।

"छोड़ दिया?" पिता और पुत्र एक हैं! सम्पूर्ण अनन्तता में, पहली बार के लिए पिता और पुत्र के लिए **अलगाव** था।

क्यों? परमेश्वरत्व में यह अलगाव क्यों?

उत्तर: इसका कारण यह था कि : जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।। (2 कुरिन्थियों 5:21)

यह पद बाइबल की एक बहुत गहरी सच्चाई की घोषणा करती है। यहाँ रुकें। इस पद को दुबारा पढ़ें, धीरे-धीरे। विचार करें ...

पाप यह करता है : क्योंकि तुम्हारे अधर्म के कामों ने **तुम्हारे और तुम्हारे परमेश्वर के बीच अलगाव की दीवार खड़ी कर दी** है। तुम्हारे पापों ने परमेश्वर के **मुख को तुमसे छिपा दिया** है, इसलिए वह तुम्हारी बात नहीं सुनता। यशायाह 59:2

ऐसा क्यों है कि वह जो पाप रहित है, जो पवित्र है, हमारे लिए पाप बनने को तैयार हुआ????

उत्तर: **उसके लिए लोग बहुत विशेष और बहुमूल्य हैं।**

1 कुरिन्थियों 13:7 प्रेम दूसरों के लिए सब बातें सह लेता है ... सब बातों में धीरज धरता है।

क्रूस से यीशु का सातवाँ वचन

लूका 23:46 और यीशु ने बड़े शब्द से पुकार कर कहा; हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं: और यह कहकर प्राण छोड़ दिए।

मरकुस 15:37-39 तब यीशु ने बड़े शब्द से चिल्लाकर **प्राण छोड़ दिये**।(38) और **मन्दिर का पर्दा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया**।(39) जो सूबेदार उसके सम्हने खड़ा था, जब उसे यूं चिल्लाकर प्राण छोड़ते हुए देखा, तो उस ने कहा, सचमुच यह मनुष्य, परमेश्वर का पुत्र था।

- "ऊपर से नीचे तक" केवल परमेश्वर के द्वारा ही सम्भव हो सकता है।
- यह वह समय था जब संध्या कालीन बलिदान की भेंट चढ़ाई जाती थी, और वह समय जब फसह का मेमना मारा जाता था (निर्गमन 12:6; व्यवस्थाविवरण 16:6)
- मुझे पूरा यकीन है कि याजक बहुत ही हैरान और घबरा गया होगा जब मन्दिर का पर्दा फटा।
- और **हमारा भी फसह जो मसीह है, बलिदान हुआ है।** (1 कुरिन्थियों 5:7)। **परमेश्वर का मेमना जो जगत के पाप उठा लिए जाता है।** (यूहन्ना 1:29)। जिस प्रकार इब्राहीम ने अपने पुत्र से कहा: हे मेरे पुत्र, परमेश्वर होमबलि की **भेड़** का उपाय आप ही करेगा।(उत्पत्ति 22:8) और यकीनन उसने किया भी!

- परदे का फटना इस बात की घोषणा करता है कि स्वर्ग का मार्ग अब सब के लिए खुल गया है। महान महायाजक प्रभु यीशु, मानो अपने लोगों के आगे-आगे जाता हुआ अब प्रवेश करने वाला है।

इब्रानियों 2:17 इस कारण उसको चाहिए था, कि सब बातों में अपने भाइयों के समान बने; जिस से वह उन बातों में जो परमेश्वर से सम्बन्ध रखती हैं, एक दयालु और विश्वासयोग्य **महायाजक** बने ताकि लोगों के पापों के लिये प्रायश्चित्त करे।

इब्रानियों 6:20 जहां यीशु मलिकिसिदक की रीति पर सदा काल का महायाजक बनकर, हमारे लिये अगुआ की रीति पर प्रवेश हुआ है।।

इब्रानियों 9:11-12 परन्तु जब मसीह आनेवाली अच्छी अच्छी वस्तुओं का **महायाजक** होकर आया, तो उस ने और भी **बड़े** और **सिद्ध तम्बू** से होकर जो हाथ का बनाया हुआ नहीं, अर्थात् सृष्टि का नहीं। (12) और बकरों और बछड़ों के लोहू के द्वारा नहीं, पर **अपने ही लोहू के द्वारा** एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश किया, और **अनन्त छुटकारा** प्राप्त किया।

- पर्दा फट जाने का अर्थ, यहूदियों और अन्य जातियों को अलग करने वाली व्यवस्था की समाप्ति।

इफिसियों 2:12-19 तुम लोग उस समय मसीह से अलग और इस्त्राए की प्रजा के पद से अलग किए हुए, और प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी न थे, और आशाहीन और जगत में ईश्वररहित थे।(13) पर अब तो मसीह यीशु में तुम जो पहिले दूर थे, **मसीह के लोहू के द्वारा निकट हो गए हो**।(14) क्योंकि वही हमारा मेल है, जिस ने दोनों को एक कर लिया: और **अलग करनेवाली दीवार को जो बीच में थी, ढा दिया।**(15) और अपने शरीर में (उसकी मृत्यु) **बैर अर्थात् वह व्यवस्था जिस की आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं,** मिटा दिया, कि **दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके** मेल करा दे। (16) और क्रूस पर बैर को नाश करके इस के द्वारा **दानों को एक देह बनाकर परमेश्वर से मिलाए।** (17) और उस ने आकर तुम्हें जो दूर थे, और उन्हें जो निकट थे, दानों को मेल- मिलाप का सुसमाचार सुनाया। (18) क्योंकि उस ही के द्वारा **हम दानों की** एक आत्मा में पिता के पास **पंहुच होती है**। (19) इसलिये तुम **अब विदेशी और मुसाफिर नहीं रहे**, परन्तु पवित्र लोगों के **संगी स्वदेशी** और **परमेश्वर के घराने के हो गए।**

- और अब समस्त मानव जाति के पास परमेश्वर तक पहुँच है और वे परमेश्वर के पास यदि वे चाहें और जब वे चाहें, आ सकते हैं।

इब्रानियों 4:16 इसलिये आओ, हम **अनुग्रह के सिंहासन** के **निकट हियाव बान्धकर चलें**, कि **हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं**, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे।।

मत्ती 27:51 और देखो मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया: और **धरती डोल गई और चटानें तड़कर गईं।**

वह जिसमें सभी वस्तुएँ स्थिर रहती हैं .... मर रहा है। पृथ्वी में सब कुछ अव्यवस्थित था।

कुलुस्सियों 1:17 ..... और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं।

यूहन्ना 19:31-42 और इसलिये कि वह **तैयारी का दिन था**, यहूदियों ने पीलातुस से बिनती की कि उन की टांगे तोड़ दी जाएं और वे उतारे जाएं ताकि सब्त के दिन वे क्रूसों पर न रहें, क्योंकि वह सब्त का दिन बड़ा दिन था।(32) सो सिपाहियों ने आकर पहिले की **टांगें तोड़ीं** तब दूसरे की भी, जो उसके साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे। (33) परन्तु **जब यीशु के पास आकर देखा कि वह मर चुका है, तो उस की टांगें न तोड़ीं।** (34) परन्तु सिपाहियों में से एक ने **बरछे से उसका पंजर बेधा और उस में से तुरन्त लोहू और पानी निकला।** (35) जिस ने यह देखा, उसी ने गवाही दी है, और उस की गवाही सच्ची है; और वह जानता है, कि सच कहता है कि तुम भी विश्वास करो।(36) ये बातें इसलिये हुईं कि पवित्र शास्त्र की यह बात पूरी हो कि **उस की कोई हड्डी तोड़ी न जाएगी।** (निर्गमन 12:46; भजन संहिता 34:20) (37) फिर एक और स्थान पर यह लिखा है, कि जिसे उन्हों ने बेधा है, उस पर दृष्टि करेंगे।। (ज़कर्याह 12:10; प्रकाशितवाक्य 1:7)

(38) इन बातों के बाद अरमतियाह के यूसुफ ने, जो यीशु का **चेला** था, (परन्तु यहूदियों के डर से इस बात को **छिपाए** रखता था), पीलातुस से बिनती की, कि मैं यीशु की लोथ को ले जाऊं, और पीलातुस ने उस की बिनती सुनी, और वह आकर उस की लोथ ले गया। (39) **निकुदेमुस** भी जो पहिले यीशु के पास रात को गया था पचास सेर के लगभग मिला हुआ गन्धरस और एलवा ले आया। (40) तब उन्हों ने यीशु की लोथ को लिया और यहूदियों के गाड़ने की रीति के अनुसार उसे सुगन्ध द्रव्य के साथ कफन में लपेटा। (41) उस स्थान पर जहां यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया था, एक बारी थी; और उस बारी में एक नई कब्र थी; जिस में कभी कोई न रखा गया था। (42) सो यहूदियों की तैयारी के दिन के कारण, उन्हों ने यीशु को उसी में रखा, क्योंकि वह कब्र निकट थी।।

वह मर गया था। अन्त हो गया था। समाप्त । कोई आशा नहीं

शिष्य : असमंजस्य में थे - रो रहे थे - छिपे थे।

अपने पूरे असमंजस्य की स्थिति और कभी समाप्त न होने वाली वार्तालाप में इन प्रश्नों के साथ, जैसे: “क्या हमारे साथ धोखा हुआ है?” “उन चमत्कारों का क्या जो हमने देखे थे?”
हो सकता है शिष्य अन्य भविष्यवक्ता द्वारा कहे गए शब्दों पर बात-चीत कर रहे हों, जिसे यीशु ने उनके सामने अनेक बार दोहराया :

मनुष्य के पुत्र के लिये अवश्य है, कि वह बहुत दुख उठाए, और पुरनिए और महायाजक और शास्त्री उसे तुच्छ समझकर मार डालें, और वह तीसरे दिन जी उठे। लूका 9:22

हो सकता है, शायद ... अब भी आशा हो ....

सिपाही : वापस अपनी छावनी में जा रहे थे, उनका मनोरंजन समाप्त हो गया

याजक और भीड़: प्रसन्न थे - बहुत हल्का महसूस कर रहे थे कि यह “गड़बड़” करने वाला मर गया है - अपना उद्देश्य पूरा होने का जश्न मन रहे हैं ।

दुष्टात्माएं - नारकीय खुशियाँ मना रहे थे - देख रहे थे कि उनका शत्रु जिसे वे छू भी नहीं सकते थे, काठ पर लटका मर रहा है। वे प्रसन्नता में चिल्ला रहे थे।

शैतान - जब परमेश्वर के पुत्र को कलवरी क्रूस पर ले जाया जा रहा था और उसे मारा गया, वह आशा से भरे उल्लास में देख रहा था। उसकी विजय पक्की थी, और उसका घमण्ड उस समय और ऊपर चढ़ गया था जब आश्चर्यजनक रूप में वह पवित्र जन पाप बना।

मृत्यु - बड़े साहस के साथ जीवन को पकड़ा और उसे मारने के लिए आगे आई

सृष्टिकर्ता मर रहा था, उसके कार्यों पर अन्धकार और अव्यवस्था छा गई, पृथ्वी हिल रही थी, चट्टानें टूट रही थीं और शैतान कुटिल मुस्कराहट के साथ यह सब देख रहा था।

एक बार फिर, **मृत्यु** सब के ऊपर सर्वोच्च ठहरी, पाप द्वारा सशक्त होकर ये बहुत ही कठिन टीम थे जिन्होंने कभी भी अपने किसी शिकार को नहीं खोया।

1 कुरिन्थियों 15:55 मृत्यु का डंक पाप है; और पाप का बल ब्यवस्था है।

यह शुक्रवार का दिन था, सब कुछ समाप्त हो गया था। ऐसा प्रतीत होता था कि शैतान, पाप और मृत्यु ने एक और जीत प्राप्त कर ली है। और यह उनकी सभी विजयों में से सबसे बड़ी थी।

परन्तु रविवार आ रहा है !

हमें अपने आप से पूछना चाहिए, **क्यों**? क्यों परमेश्वर के पुत्र को मनुष्य रूप में इस संसार में जन्म लेना पड़ा और सब कुछ सहना पड़ा ???

इसका केवल एक ही उत्तर है। **वह निश्चय ही हमारे सोचने-समझने से बड़कर लोगों से (आप से) प्रेम करता है।**

मनुष्य जाति को छुड़ाने और हमारे पापों की क्षमा के लिए उसकी मृत्यु, लज्जा, दुःख, पीड़ा, सब इस बात की घोषणा करते हैं कि **उसके लिए लोगों का बहुत महत्व है।**

लोग इस पृथ्वी पर सबसे बड़ा खज़ाना हैं!

आप उसके बहुमूल्य हीरा हैं। उसकी अनमोल अमानत !

शनिवार .... परन्तु रविवार आने वाला है!

मत्ती 27:62-66 दूसरे दिन जो तैयारी के दिन के बाद का दिन था, महायाजकों और फरीसियों ने पीलातुस के पास इकट्ठे होकर कहा।(63) हे महाराज, हमें स्मरण है, कि उस भरमानेवाले ने अपने जीते जी कहा था, कि **मैं तीन दिन के बाद जी उठूंगा।** (64) सो आज्ञा दे कि तीसरे दिन तक **कब्र की रखवाली की जाए**, ऐसा न हो कि उसके चेले आकर उसे चुरा ले जाएं, और लोगों से कहनें लगें, कि वह मरे हुओं में से जी उठा है: तब पिछला धोखा पहिले से भी बुरा होगा। (65) पीलातुस ने उन से कहा, **तुम्हारे पास पहरूए तो हैं जाओ, अपनी समझ के अनुसार रखवाली करो।** (66) सो वे पहरूओं को साथ ले कर गए, और पत्थर पर मुहर लगाकर कब्र की रखवाली की।।

रविवार की सुबह, तड़के — खाली कब्र

मत्ती 28**सब्त के दिन के बाद** (शनिवार) सप्ताह के पहिले दिन **पौ फटते** ही मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र को देखने आई। (2) और देखो **एक बड़ा भूडोल हुआ**, क्योंकि प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा, और पास आकर उसने **पत्थर को लुढ़का दिया**, और उस पर बैठ गया। (देखें मत्ती 27:52-53) (3) उसका रूप बिजली का सा और उसका वस्त्र पाले की नाई उज्ज्वल था। (4) उसके भय से पहरूए कांप उठे, और मृतक समान हो गए। (पहरुए अभी भी वहीं थे) (5) स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा, कि तुम मत डरो : मै जानता हूँ कि तुम यीशु को जो क्रुस पर चढ़ाया गया था ढूंढ़ती हो।(6) **वह यहाँ नहीं है, परन्तु अपने वचन के अनुसार जी उठा है;** आओ, यह स्थान देखो, जहाँ प्रभु पड़ा था। (7) और शीघ्र जाकर उसके चेलों

से कहो, कि **वह मृतकों में से जी उठा है**; और देखो वह तुम से पहिले गलील को जाता है, वहाँ उसका दर्शन पाओगे, देखो, मैं ने तुम से कह दिया।

यूहन्ना 20:2-10 तब वह दौड़ी और शमौन पतरस और उस दूसरे चेले के पास जिस से यीशु प्रेम रखता था आकर कहा, वे प्रभु को कब्र में से निकाल ले गए हैं; और हम नहीं जानतीं, कि उसे कहां रख दिया है। (3) तब **पतरस** और वह **दूसरा चेला** निकलकर कब्र की ओर चले। (4) और दोनों साथ साथ **दौड़** रहे थे, परन्तु दूसरा चेला पतरस से आगे बढ़कर कब्र पर पहिले पहुंचा। (5) और झुककर कपड़े पड़े देखे: तौभी वह भीतर न गया। (6) तब **शमौन पतरस** उसके पीछे पीछे पहुंचा और कब्र के भीतर गया और **कपड़े पड़े देखे**। (7) और वह अंगोछा जो उसके सिर से बन्धा हुआ था, कपड़ों के साथ पड़ा हुआ नहीं परन्तु अलग एक जगह लपेटा हुआ देखा। (8) तब दूसरा चेला भी जो कब्र पर पहिले पहुंचा था, भीतर गया और देखकर विश्वास किया। (9) **वे तो अब तक पवित्र शास्त्रा की वह बात न समझते थे, कि उसे मरे हुओं में से जी उठना होगा।** (10) तब ये चेले अपने घर लौट गए।

खाली कब्र में एक जगह लपेटे मृतक के कपड़े पुनरुत्थान का **प्रमाण** है। यदि किसी मित्र और शत्रु ने देह चुराई होती तो उसने उन कपड़ो को देह पर लिपटा रहने दिया होता क्योंकि उसे मरे तीन दिन और रात हो चुकी थी। जब यूहन्ना ने कपड़े देखे और समझ गया कि उसमें वैसी ही तह लगी है जिस प्रकार देह में लपेटते समय थी। अत: वह जान गया कि चमत्कार हुआ है। यीशु मसीह उन कपड़ो से बाहर निकल आया और वे कपड़े बिना तह को बिगाड़े गिर पड़े। वे कपड़े उस खाली कब्र में "पक्के प्रमाण" की तरह रह गए तथा जब यूहन्ना ने देखा तो समझ गया, उसने विश्वास किया कि यीशु मृतकों में से जीवित हो गया है।

मत्ती 28:8 और वे भय और बड़े आनन्द के साथ कब्र से शीघ्र लौटकर उसके चेलों को समाचार देने के लिये दौड़ गई। (9) और देखो, **यीशु उन्हें मिला** और कहा; `सलाम' और उन्हों ने पास आकर और उसके पाँव पकड़कर उसको दणडवत किया। (10) तब यीशु ने उन से कहा, मत डरो; मेरे भाईयों से जाकर कहो, कि गलील को चलें जाएं वहाँ मुझे देखेंगे।।
(11) वे जा ही रही थी, कि देखो, पहरूओं में से कितनों ने नगर में आकर पूरा हाल महायाजकों से कह सुनाया।(12) तब उन्हों ने पुरनियों के साथ इकट्ठे होकर सम्मति की, और **सिपाहियों को बहुत चान्दी देकर** कहा। (13) कि **यह कहना, कि रात को जब हम सो रहे थे, तो उसके चेले आकर उसे चुरा ले गए।** (14) और यदि यह बात हाकिम के कान तक पहुंचेगी, तो हम उसे समझा लेंगे और तुम्हें जोखिम से बचा लेंगे। (15) सो उन्हों ने रूपए लेकर जैसा सिखाए गए थे, वैसा ही किया; और यह बात आज तक यहूदियों में प्रचलित है।।

- शिष्यों में पहरुओं से लड़ने की हिम्मत नहीं थी। वे अपनी जान बचाने के लिए डर के मारे छिपे हुए थे। उन्हें लग रहा था कि सब समाप्त हो गया है।

- यदि उन्होंने देह चुराई होती, तो फिर आप कैसे इस सच्चाई की पुष्टि कैसे कर पाएंगे कि उन सभी ने दुःख उठाया और अधिकाँश शहीद हो गए। हो सकता था कि मृत्यु को सामने देखकर उनमें से एक उस "चुराई देह" को छिपा के रखने का स्थान बता देता ताकि अपना जीवन बचा सके।

- किसी को भी यीशु की देह चुराने के इल्ज़ाम में पकड़ा नहीं गया और न ही मुकदमा चलाया गया। यह इस बात का प्रमाण है कि राज करने वाले अधिकारियों को पहरुओं की इस कहानी का विश्वास नहीं था, अन्यथा वे उसके कुछ चेलों को गिरफ़्तार करते।

- पहरुओं को काम पर सोने के लिए मृत्यु दण्ड तक दिया जा सकता था। परन्तु उन्हें गिरफ़्तार तक नहीं किया गया, जो यह दिखाती है कि अधिकारियों ने भी इस कहानी पर विश्वास नहीं किया।

- यदि वे सो रहे थे तो उन्हें कैसे पता चला कि चेलों ने देह "चुराई" है। यह जानकर कि वे चेले थे, उन्होंने उन्हें देखकर रोका होता।

- यदि यीशु के शत्रुओं ने उसकी देह को वहाँ से हटाया होता, तो वे असानी से उसे सामने ला कर मसिहयत को वहीँ पूर्णत: समाप्त कर देते।

यूहन्ना 20:19-29 उसी दिन जो सप्ताह का पहिला दिन था, **सन्ध्या के समय** जब वहां के द्वार जहां चेले थे, यहूदियों के डर के मारे बन्द थे, तब **यीशु आया और बीच में खड़ा होकर** उन से कहा, **तुम्हें शान्ति मिले**। (20) और यह कहकर उस ने अपना **हाथ** और अपना **पंजर** उन को **दिखाए**: तब **चेले प्रभु को देखकर आनन्दित हुए**। (21) यीशु ने फिर उन से कहा, तुम्हें शान्ति मिले; जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूं। (22) यह कहकर उस ने उन पर फूंका और उन से कहा, **पवित्र आत्मा लो**।(23) जिन के पाप तुम क्षमा करो वे उन के लिये क्षमा किए गए हैं जिन के तुम रखो, वे रखे गए हैं।।

पाप **क्षमा हुए** और **मिटा दिए** गए।

इसलिए अब पवित्र आत्मा इन शिष्यों "**में**" निवास कर सकता है। उनका पुनरुत्थान के दिन **"नया जन्म"** हुआ था!

(24) परन्तु बारहों में से एक व्यक्ति अर्थात् **थोमा** जो दिदुमुस कहलाता है, जब यीशु आया तो उन के साथ न था। (25) जब और चेले उस से कहने लगे कि **हम ने प्रभु को देखा है:** तब उस ने उन से कहा, जब तक मैं उस के हाथों में कीलों के छेद न देख लूं, और कीलों के छेदों में अपनी उंगली न डाल लूं, तब तक मैं प्रतीति नहीं करूंगा।।

(26) **आठ दिन के बाद** उस के चेले फिर घर के भीतर थे, और थोमा उन के साथ था, और द्वार बन्द थे, तब यीशु ने आकर और बीच में खड़ा होकर कहा, तुम्हें शान्ति मिले। (27) तब उस ने थोमा से कहा, अपनी उंगली यहां लाकर मेरे पंजर में डाल और अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो। (28) यह सुन थोमा ने उत्तर दिया, हे **मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर**! (29) यीशु ने उस से कहा, तू ने तो मुझे देखकर विश्वास किया है, धन्य हैं वे जिन्हों ने बिना देखे विश्वास किया।।

महान आज्ञा

मत्ती 28:16 और ग्यारह चेले गलील में उस पहाड़ पर गए, जिसे यीशु ने उन्हें बताया था। (17) और **उन्हों ने उसके दर्शन पाकर** उसे प्रणाम किया, पर किसी किसी को सन्देह हुआ। (18) यीशु ने उन के पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। (19) इसलिये तुम **जाकर** सब जातियों के लोगों को **चेला बनाओ** और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से **बपतिस्मा दो।** (20) और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना **सिखाओ**: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।।

यीशु मसीह का अनूठा पुनरुत्थान

विश्व के अधिकाँश धर्म, दार्शनिक प्रस्तावनाओं पर आधारित हैं। व्यक्तित्व पर आधारित चार धर्मों में से केवल मसिहयत खाली कब्र को अपना संस्थापक होने का दावा करता है।

वास्तविक लेखों में बुद्ध के पुनरुत्थान का कोई दावा नहीं है। मोहम्मद की मृत्यु 8 जून 638 ई. को मदीना में हुई। आज भी हर साल लाखों मुसलमान उसकी कब्र देखने के लिए वहाँ जाते हैं।

यहूदी धर्म का पिता इब्राहीम की मृत्यु करीब 1900 ई.पू. में हुई, परन्तु उसके भी पुनरुत्थान का कोई दावा नहीं।

यीशु ने अपने पुनरुत्थान के बारे में पहले से ही कई बार बता दिया और इस बात पर बल दिया कि उसका मृतकों में से जी उठना, उसके मसीह होने के दावे की पुष्टि का "चिन्ह" होगा।

मत्ती 12:38-40 इस पर कितने शास्त्रियों और फरीसियों ने उस से कहा, हे गुरू, हम तुझ से एक चिन्ह देखना चाहते हैं। .... योना भविष्यद्वक्ता के चिन्ह को छोड़ कोई और चिन्ह उन को न दिया जाएगा। योना तीन राज दिन जल जन्तु के पेट में रहा, वैसे ही मनुष्य का पुत्र **तीन रात और दिन पृथ्वी के भीतर रहेगा।**

मत्ती 16:21 उस समय से यीशु अपने चेलों को बताने लगा, कि मुझे अवश्य है, कि यरूशलेम को जाऊं, और पुरनियों और महायाजकों और शास्त्रियों के हाथ से बहुत दुख उठाऊं; और **मार डाला** जाऊं; और तीसरे दिन **जी उठूं।**

मत्ती 17:9 जब वे पहाड़ से उतर रहे थे तब यीशु ने उन्हें यह आज्ञा दी; कि जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से न जी उठे तब तक जो कुछ तुम ने देखा है किसी से न कहना।

मत्ती 17:22-23 जब वे गलील में थे, तो यीशु ने उन से कहा; मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाएगा। और वे उसे मार डालेंगे, और वह तीसरे दिन जी उठेगा।(23) इस पर वे बहुत उदास हुए।।

मत्ती 20:18-19 देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं; और मनुष्य का पुत्र महायाजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जाएगा और वे उस को घात के योग्य ठहराएंगे।(19) और उस को अन्यजातियों के हाथ सोंपेंगे, कि वे उसे ठट्ठों में उड़ाएं, और कोड़े मारें, और क्रूस पर चढ़ाएं, और वह तीसरे दिन जिलाया जाएगा।।

मत्ती 26:32 परन्तु मैं अपने जी उठने के बाद तुम से पहले गलील को जाऊंगा।

मत्ती 27:63 हे महाराज, हमें स्मरण है, कि उस भरमानेवाले ने अपने जीते जी कहा था, कि **मैं तीन दिन के बाद जी उठूंगा।**

यीशु मसीह के सिवाय, किसी भी धर्म के संस्थापक या लोगों के अगुवे ने यह कहने का कभी साहस नहीं किया कि वह अपनी मृत्यु के बाद मृतकों में से जी उठेगा। क्योंकि यदि वह जी नहीं उठता, तो इस पंथ का तभी अन्त हो जाता।

यीशु मसीह ने निर्भीकता से इस बात की भविष्यवाणी की और तीसरे दिन ऐसा ही हुआ तथा मसिहयत का जन्म हुआ जिसका बढ़ना कभी रुका नहीं क्योंकि हम जीवित उद्धारकर्ता की सेवा करते हैं।

उस ने दु:ख उठाने के बाद बहुत से पक्के प्रमाणों से अपने आप को उन्हें जीवित दिखाया ... प्रेरितों के काम 1:3

आँखों देखे गवाह:

1. वह सबसे पहले मरियम मगदलीनी को दिखाई दिया — यूहन्ना 20:11-18
2. कब्र से लौट रही स्त्रियों को — मत्ती 28:5-10
3. पतरस को — लूका 24:34
4. इम्माऊस के शिष्य — लूका 24:13-31
5. प्रेरित — लूका 24:36-43
6. थोमा और प्रेरित — यूहन्ना 20:24-29
7. तिबिरियास झील के किनारे सात जन — यूहन्ना 21:1-23
8. पांच सौ से अधिक को — 1 कुरिन्थियों 15:6
9. याकूब को — 1 कुरिन्थियों 15:7
10. एक बार फिर ग्यारह चेलों को — मत्ती 28:16-20
11. प्रथम शहीद, स्तिफुनुस — प्रेरितों के काम 7:55
12. दमिश्क के रास्ते पर पौलुस — प्रेरितों के काम 9:3-6; 1 कुरिन्थियों 15:8

बहुत से ये **आँखों देखे गवाह शहीदी मृत्यु मरे** क्योंकि उन्होंने पुनरुत्थित यीशु का प्रचार किया। वे जीवित मसीह के लिए मरने को खुशी-खुशी तैयार थे। उनके पास "पक्के प्रमाण" थे।

जब गतसमनी के बाग में यीशु को पकड़ा गया, तब उसके सब चेलें उसे छोड़कर भाग गए (मत्ती 26:56)। इस समय से पुनरुत्थान तक, चेले भय में रहे। उन्होंने विश्वास नहीं किया कि यीशु मृतकों में से जीवित हो जाएगा (यूहन्ना 20:9)। यदि यीशु मृतकों से जी न उठा होता, तो क्रूस मसिहयत का अन्त होती।

यीशु की मृत्यु के पश्चात, हम उसके चेलों को उदास, निराश और पराजित देखते हैं। यीशु की मृत्यु उनके लिए एक अर्थ रखती थी: अन्त। तीन दिन और तीन रात के पश्चात **उनके जीवन में आए बड़े बदलाव को हम कैसे समझ सकते हैं**? इसका केवल यही तार्किक स्पष्टीकरण है कि उनके पास **"पक्के प्रमाण"** थे कि **वह मृतकों में से जी उठा है,** और सदा के लिए जीवित है। उन्होंने उसे देखा, उसके साथ बात-चीत की, उसे छुआ और उसके साथ खाया।

चेलों के जीवन में भय से असीमित साहस तक का बदलाव प्रमाण है कि वे **जानते थे वह जीवित है**। वे सताव में आनन्दित हुए (प्रेरितों के काम 5:40-42)। जी उठे मसीह में अपने विश्वास के साथ उन्होंने मृत्यु चुनी, बजाय इसके कि वे उस विश्वास का इनकार करते और अपने प्राण बचाते (इब्रानियों 11:35)।

आरम्भिक कलीसिया सप्ताह के पहले दिन आराधना करने लगी, जो पुनरुत्थान का दिन था। इसके लिए कोई नियम नहीं बनाया, वरन यह अपने आप बन गया (प्रेरितों के काम 20:7)। मसीही के लिए, प्रत्येक रविवार उसके पुनरुत्थान को मनाना है।

आरम्भिक मसीही उसके पुनरुत्थान की घोषणा करते हुए सब जगह गए (प्रेरितों के काम 8)

उपसंहार : **प्रभु सचमुच जी उठा है** लूका 24:34

यीशु मसीह ... **मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है।** ... रोमियों 1:4

1 कुरिन्थियों 15:20-23 परन्तु सचमुच **मसीह मुर्दों में से जी उठा है**, और जो सो गए हैं, उन में पहिला फल हुआ। (21) क्योंकि जब मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई; तो मनुष्य ही के द्वारा **मरे हुओं का पुनरूत्थान** भी आया। (22) और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसा ही **मसीह में सब जिलाए जाएंगे।** (23) परन्तु हर एक अपनी अपनी बारी से; पहिला फल मसीह; फिर मसीह के आने पर उसके लोग।

यूहन्ना 14:19 .... **इसलिये कि मैं जीवित हूं, तुम भी जीवित रहोगे।**

यहाँ लेखा है:

कनफुसियास की कब्र	-	भरी है
बुद्ध की कब्र	-	भरी है
मोहम्मद की कब्र	-	भरी है
यीशु मसीह की कब्र	**-**	**खाली है!**

निर्णय अब आपको करना है। प्रमाण अपने आपमें बोलते हैं।

वे बहुत स्पष्ट रीति से कहते हैं:

यीशु सचमुच जी उठा है !

यह बेजोड़ है! केवल और मात्र एक ही । दूसरों से बिलकुल अलग। इसके सामानता में कोई नहीं।

यीशु ... जिस ने उस **आनन्द** के लिये जो उसके आगे धरा था, **लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा**; और सिंहासन पर परमेश्वर के दहिने जा बैठा।(12:2) .... **पापों के बदले एक ही बलिदान सर्वदा के लिये** चढ़ाकर परमेश्वर के दहिने जा बैठा। और उसी समय से इस की **बाट जोह रहा है**, कि उसके बैरी उसके पांवों के नीचे की पीढ़ी बनें। (इब्रानियों 10:12-13)

उसने अपना कार्य पूरा किया। अब वह हमारी प्रतीक्षा में है कि हम अपने कार्य को पूरा करें। राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा।। मत्ती 24:14